दैनिक नवज्योति

Udaipur 6 April, 2017

हृदयस्पर्शी इस नाटक का आज भी होगा मंचन

नाटक 'महात्मा के महात्मा' से बंध गए दर्शक

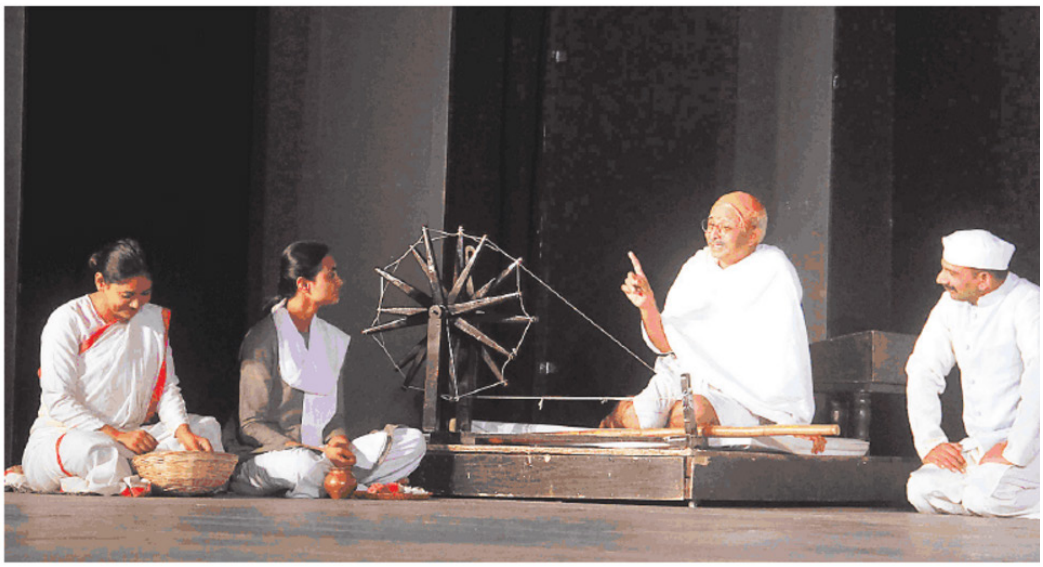

उदयपुर। युगपुरूष महात्मा के महात्मा के नाटक महात्मा गांधी के गुरू श्रीमद रामचंद्रजी और गांधीजी के प्रगाढ़ आध्यमिक संबंध की रसमयी यशोगाधा दर्शाता हुआ हृदयस्पर्शी नाटक है।

यह नाटक युवाओं को उच्चत्तर ध्येय युक्त सार्थक जीवन के प्रति आकर्षित करता है। इस नाटक का मंचन बुधवार को लोक कला मंडल में हुआ। श्रीमद रामचंद्र की इस साल 150 वीं जयंती मनाई जा रही है। राजेश जोशी के दिग्दर्शन,उत्तम गढ़ा के लेखन व राकेश भाई की प्रेरणा से बने इस उम्दा नाटक द्वारा गांधीजी की आंतरिक एवं बाहय विकास यात्रा को दर्शाया गया है। नाटक में महात्मा गांधी के बेरिस्टर बनने केबाद श्रीमद जी से मिलन,दक्षिण अफ्रीका जाने पर पत्र व्यवहार व श्रीमद के जीवन से सत्य, अंहिसा, सत्याग्रह जैसे जीवन मूल्यों की स्थापना को बखूबी मंचित किया गया। पात्रों का अभिनय मंच पर जींवत हो गया। नाटक में संगीत सचिन जिगर ने दिया। ध्वनि,रंगों का प्रभाव,पार्श्व साउंड आदि का अनुपम प्रयोग किया गया। 'युगपुरुष' केवल एक नाटक नहीं है, बल्कि दर्शकों को होने वाला एक अनुपम अनुभव है। जब दो युगपुरुष रंगमंच पर पुनः जीवंत होते हैं तब भारत के इतिहास का एक ऐसा पन्ना खुलता है जो दर्शकों को मुग्ध कर जाता है। ये दो युगपुरुष हैं महात्मा गांधी और श्रीमद्! महात्मा गांधी ने भारत तथा विश्व को सत्य और अहिंसा के सनातन सिद्धांत प्रदान किए और बेरिस्टर मोहनदास में इन सिद्धांतों को प्रस्थापित करनेवाले, उनके चरित्र का घड़ करने वाले, उनके आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे -श्रीमद राजचंद्रजी। मोहनदास से महात्मा गांधी तक की महायात्रा इस नाटक द्वारा उजागर होती है। नाटक के दर्शक जब इस यात्रा के साक्षी बनते हैं, उनके हृदय के तार बजने लगते हैं, इतने सुंदर तरीके से इस महागाथा को प्रस्तुत किया गया है। गांधीजी ने 1930 में मॉडर्न रिव्यू में लिखा था कि इस व्यक्ति ने धर्म की बातों में मेरा हृदय जीत लिया है और आज तक किसी ने भी मेरे हृदय पर ऐसा प्रभाव अंकित नहीं किया है।

इस नाटक में गांधीजी श्रीमद् राजचंद्रजी के पास से ग्रहण किए गए सत्य एवं अहिंसा के मूल्यों का और उनका भारत के स्वातंत्र्य संग्राम में किए अभूतपूर्व प्रयोगों का हृदयसर्पी निरूपण हुआ है। वर्तमान युग में भौतिक सुखों के पीछे दौड रहे मनुष्य को यह नाटक विचार करने के लिए प्रेरित करता है कि जीवन का ध्येय क्या होना चाहिए? मानवता ही सबसे उत्तम मूल्य है। मानवीय मूल्यों को अपनाकर जीवन आंतरिक रूप से अधिक समृद्ध बने और एक प्रेमयुक्त, शांतिपूर्ण तथा मैत्रीभाव से भरपूर निर्भय समाज का निर्माण हो, ऐसा सकारात्मक प्रभाव इस नाटक द्वारा दर्शकों पर हुआ। श्रीमद् राजचंद्रजी का यह 150वां जन्मजयंती वर्ष है। इसके निमित्त रूप हो रहे एक वर्षीय समारोह के अंग रूप, श्रीमद् राजचंद्रजी के परम भक्त तथा श्रीमद् राजचंद्र मिशन धरमपुर के संस्थापक श्री राकेश भाई की प्रेरणा से, इस नाटक का निर्माण किया गया है।